ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

जगबीर सिंह

सहायक प्रोफेसर, के. एम. राजकीय महाविद्यालय नरवाना (जींद)

शोध सार :

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य का विकास समाज के बीच होता है। समाज में जब कोई बड़ा परिवर्तन आता है तो साहित्य पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार से भारत जब परतंत्रता की बेड़ियों से जकड़ा हुआ था तो तत्कालीन समाज ने स्वाधीनता के भाव को मुखर किया । भारतेंदु युग से ही राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत साहित्य की शुरुआत हो गई थी। इस युग के साहित्यकारों ने भारत की दुर्दशा, तथा अंग्रेजों की भारतीयों के प्रति शोषण, अन्याय एवं अत्याचार की नीति का चित्रांकन अपने साहित्य में किया। स्वाधीनता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्म सम्मान, गर्व , गौरव तथा सबसे अधिक लहू को समेटे हुए है। स्वाधीनता आंदोलन में सृजनशील लेखन धर्मियों तथा साहित्यकारों ने प्रहरी के रूप में कार्यरत होकर देश की जनता को जागरूक करने का प्रयास किया। उस काल में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका निभाई।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

इसी युग में मुंशी प्रेमचंद ने कथा साहित्य एवं उपन्यासों के माध्यम से जनता की मुख्य भावनाओं को शब्दों में ढाला। इनका संपूर्ण साहित्य ही जनता की आवाज बन गया। जयशंकर प्रसाद के चंद्रगुप्त , स्कंदगुप्त नाटकों में देश प्रेम की भावना हिलोरें लेती नजर आई। गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित राष्ट्रीय जागरण के दूत द्विवेदी युग के कवियों ने अंग्रेजी शासन का प्रबल विरोध तथा भारतीय जनता को जागृत करने का काम किया। स्वाधीनता आंदोलन में भारत कोकिला सरोजिनी नायडू, देश की मिट्टी को समर्पित गोपाल सिंह नेपाली, राधेश्याम कथावाचक राधा कृष्ण दास, निराला, पंत कवि शंकर सरोज, जन गण मन के रचयिता रविंद्र नाथ ठाकुर, वंदे मातरम गीत के रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी , पंडित श्याम नारायण पांडेय ,बाल गंगाधर तिलक, पंडित जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, दिनकर, शिवमंगल सिंह सुमन जैसे साहित्यकारों ने अंग्रेजों के अत्याचारों से संत्रस्त व हताश जनता के मन में स्वाधीनता की चेतना जगाने का प्रयास किया। यह ऐसा साहित्य लेखन था जिसे पढ़कर या सुनकर हमारे देश की तत्कालीन युवा पीढ़ी के खून में क्रांति का उबाल आया तथा देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

भावना से ओत-प्रोत हो उठे।

पराधीनता के उस काल में जब सर्वत्र पराभाव ही पराभाव दिखाई देता था तब हमारे देश के ऐसे क्रांतिकारी साहित्यकारों, कवियों, लेखकों ने अपने-अपने ढंग से आजादी के आंदोलन में कूदने का आह्वान किया। इस प्रकार से स्वाधीनता आंदोलन में तत्कालीन साहित्यकारों द्वारा अतुलनीय योगदान दिया गया।

बीज शब्द: राष्ट्रीय अस्मिता, किंकर्तव्यविमूढ़ , जनसंस्कृति, दिग्भ्रमित , सृजनशील, साम्राज्यवादी, पराधीनता

शोध आलेख :

स्वाधीनता और स्वतंत्रता:- स्वतंत्रता का संबंध अनिवार्य रूप से स्वाधीनता की चेतना से होता है । स्वाधीन हृदय ही सर्वत्तोमुखी स्वतंत्रता की साधना कर सकता है। इसलिए स्वाधीनता किसी भी राष्ट्र और जाति के लिए स्वतंत्रता से ज्यादा गहरी और व्यापक अवधारणा होती है। स्वतंत्रता में तंत्र शब्द शासन के अधीन रहकर जीवन यापन की ओर संकेत करता है, जबकि स्वछंदता में छंद अर्थात अपनी इच्छा के अनुरूप होकर कार्य करना है। अपने स्व का ज्ञान न होने से स्वतंत्रता की चेतना का अभाव होता है। स्वतंत्रता स्वछंदता का एक पक्ष माना जा सकता है। जिस प्रकार से सांस्कृतिक जागरण का पक्ष राजनीतिक जागरण है। हिंदी साहित्य स्वाधीन चेतना के निर्माण के माध्यम से स्वतंत्रता की साधना करता है। निराला की कविता 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' इस भावबोध की अभिव्यक्ति करने वाली प्रमुख कविता है।

"नव गति, नव लय, ताल- छंद नव,
नव कंठ, नव जलद -मंद्र रवय,
नव नभ के, नव विहग- वृंद को
नव पर नव स्वर दे !
वर दे वीणा वादिनी वर दे!"1

नव की इस आकांक्षा का विकास साहित्य के विकास और समाज के बीच पैदा होता है। भारत परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और ऐसे में लेखक की कलम स्वाधीन व्यक्ति को उसके अधिकार, विश्वास, अपने आप को अभिव्यक्त करने और बंधनों से मुक्त होने तथा अपने अनुसार जिंदगी चुनने की शक्ति देने का प्रयास करती है । स्वाधीन व्यक्ति ही अपने आप को प्रत्येक प्रकार के बंधन से मुक्त करते हुए अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। अंग्रेज हमसे हमारी चेतना, हमारा स्व छीन लेना चाहते थे ताकि स्वतंत्रता का विचार पैदा ही ना हो। स्वाधीनता का भाव व्यवस्था और हृदय की प्रत्येक जकड़बंदी के विरुद्ध मुक्ति का रास्ता तैयार करता है। स्वाधीनता आंदोलन में अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों के साथ-साथ क्रांतिकारियों, आंदोलनकारियों लेखकों,कवियों और पत्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वाधीनता आंदोलन की शुरुआत 1857 के स्वतंत्रता संग्राम(जिसे अंग्रेजों ने सैनिक विद्रोह का नाम दिया था) से माना जाता है । इस आंदोलन का उद्देश्य अंग्रेजी शासन से भारतीय उपमहाद्वीप को मुक्त कराना था। जब अंग्रेज सरकार भारतवासियों पर जुल्म ढहा रही थी, उस समय साहित्यकारों ने प्रहरी के रूप में कार्यरत होकर देश की जनता को जागरूक करने का प्रयास किया। उस काल में साहित्य लेखन की सभी विधाओं में बेहतर ढंग से लिखने की होड़ सी चली रही। इस आंदोलन को साहित्यिक रूप से गति देने का कार्य भारतेंदु युग से माना जाता है। इस युग के लेखकों ने अपनी पत्र -

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

पत्रिकाओं और साहित्यिक विधाओं के माध्यम से समाज में नई जागृति लाने का प्रयास किया। स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भारत दुर्दशा नाटक में भारत की खराब स्थिति तथा अंग्रेजों की भूमिका का चित्रांकन करते हुए लिखा है-

"रोवहु सब मिलि कै आवहु भारत भाई।
हा- हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

इसी युग के राधा कृष्ण दास ने भारत बारहमासा में देश की दयनीय स्थिति के प्रति चिंता प्रकट की। कवि शंकर ने रचना 'शंकर सरोज' में अपनी भावना को प्रकट करते हुए लिखा है-

'प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा'।

भारतेंदु जी एक तरफ अपने साहित्य से देश प्रेम की नदी में भारतवासियों की डुबकी लगवा रहे थे तो दूसरी तरफ हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा बनाने की पुनीत कार्य में भी लगे हुए थे। उन्होंने अपनी कविता 'निज भाषा' में कहा है-

" निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"

द्विवेदी युग

परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए द्विवेदी युग के कवियों ने अपनी रचनाओं के द्वारा लोगों के मस्तिष्क को झकझोर दिया। स्वाधीनता आंदोलन के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने ढंग से बलिदान दिए। हर प्रांत, हर भाषा के साहित्यकारों, कवियों और लेखकों ने अपनी मूर्धन्य लेखनी द्वारा अपनी -अपनी आहुतियां डालने का आह्वान किया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका निभाई। गुप्त जी ने अपनी रचना भारत भारती में स्वदेश प्रेम का ऐसा वर्णन किया की संपूर्ण राष्ट्र में प्रभात फेरियां ,राष्ट्रीय आंदोलन, शिक्षा संस्थानों, प्रातः कालीन प्रार्थनाओं में 'भारत भारती' के पद गांव- नगरों में गाए जाने लगे । उन्होंने उन व्यक्तियों को पशु के समान बताया जिन्हें अपने देश से प्यार नहीं है। उन्होंने अपनी रचना में कहा

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु निरा और मृतक समान है ।।

जो भारत सोने की चिड़िया होती थी आज उसकी क्या हालत हो चुकी है उसके संदर्भ में भी गुप्त जी ने देशवासियों को विचार करने का आह्वान किया।

हम क्या थे, क्या हो गए, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारे मिलकर ये समस्याएं सभी।। 2

स्वाधीनता आंदोलन में अहम योगदान देने वाली वीरांगना श्रेष्ठ कवयित्री भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने झीलों की रानी शीर्षक से लंबी कविता 'द गिफ्ट ऑफ इंडिया' में लिखकर अपने मधुर कंठ से आजादी का गान किया।

देश की मिट्टी को समर्पित गोपाल सिंह नेपाली जी की कविताओं में कूट-कूट कर भरी राष्ट्रीय चेतना व जोश जगाने वाली है। उनके काव्य में राष्ट्रीयता युगीन प्रवृत्ति के रूप में नहीं बल्कि अंदर से उपजी थी। देश की मिट्टी से उनका गहरा लगाव था।

इस युग के कवियों ने न केवल देशवासियों को स्वदेश प्रेम के लिए प्रेरित किया बल्कि स्वयं भी देश के लिए बलिदान देने को तैयार थे। सोहनलाल द्विवेदी देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए हुए हैं। वह लिखते हैं-

हो जहां बलि शीश अगणित,

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

एक सिर मेरा और मिला लो।

गया प्रसाद शुक्ल स्नेही भी अपने देश के प्रति प्रेम को इस प्रकार से प्रकट करते हैं-

"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।"

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी वाली रानी' को कौन भूल सकता है जिसने अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दी थी। उनकी ये पंक्तियां आज भी उतनी ही सार्थक हैं जितनी 100 साल पहले थ

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी ।
बुड्ढे भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी।
चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झांसी वाली रानी थी।।

इन कवियों ने वीर रस वाली कविताएं सृजित कर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया था। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने विप्लव गान में कहा है-

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।।"

गुलाम व्यक्ति को सपने में भी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती, इस मर्म को स्वाधीनता की लड़ाई में वीर सैनिक ही नहीं बल्कि भारतीय जनता भी अच्छी प्रकार से जान गई थी।

औज व वीर रस के कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने हिम किरीटनी, हिम तरंगिणी आदि कृतियों में राष्ट्रीय भाव को जागृत किया। उनकी पुष्प की अभिलाषा कविता में देश पर न्योछावर होने वाले वीरों के प्रति कितना सम्मान है इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

चाह नहीं मैं सुर बाला के, गहनों में गूंथा जाऊं।
चाहा नहीं ,प्रेमी माला में,बिंध प्यारी को ललचाऊं
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जांए वीर अनेक।।

स्वाधीनता आंदोलन और साहित्य का जिक्र हो, उसमें मुंशी प्रेमचंद का नाम ना आए तो वह साहित्य और स्वाधीनता अधूरी रह जाती है। उपन्यास व कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की अद्भुत लेखनी ने जनता की मूक भावनाओं को शब्दों में ढाला जिससे इनका संपूर्ण साहित्य ही जनता की आवाज बन गया। हिंदी उपन्यास हिंदी साहित्य की ऐसी रमणीय विधा है जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को अपने विस्तृत पट भूमि पर कल्पना की कूंची से यथार्थ रूप में उकेरा है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष के समय हिंदी साहित्य एवं खासकर उपन्यासों की जो भूमिका रही वह राष्ट्रवाद के रूप में जानी जाती है।

रंगभूमि उपन्यास में पूंजीवाद के साथ जन संघर्ष व बदलाव की महान गाथा है। भारत के आम जनमानस की गाथा है। नौकरशाही तथा पूंजीवाद के साथ जन संघर्ष का तांडव, सत्य निष्ठा और अहिंसा के प्रति आग्रह ग्रामीण जीवन तथा स्त्री दुर्दशा का भयावह चित्र अंकित करता है। कथा का नायक सूरदास का पूरा जीवन क्रम यहां तक की उसकी मृत्यु भी राष्ट्र नायक की छवि के रूप में लगती है। स्वतंत्रता आंदोलन की ,संघर्ष की, अपनी कर्म भूमि में अपने कर्म करते हुए की निष्ठा को दर्शाते हुए उसने लिखा है-

तू रंगभूमि में आया, दिखलाने अपनी माया।
क्यों धर्म नीति को तौड़े?
भई, क्यों रण से मुंह मोड़ै। 3

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

इस प्रकार से देशवासियों को रंगभूमि के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने संदेश दिया कि युद्ध के मैदान से पीछे हटना किसी भी प्रकार की धर्म नीति नहीं कहीं जा सकती।

कर्मभूमि उपन्यास राजनीतिक उपन्यास हैं ।इसमें कुछ परिवार पारिवारिक समस्याओं से जूझते हुए भी राजनीतिक आंदोलन में भाग ले रहे हैं। यह सभी गांधी जी के सत्याग्रह से प्रभावित हैं ।गांधी जी का कहना था कि जेलों को इतना भर देना चाहिए कि इनमें जगह नहीं रहे और इस प्रकार शक्ति और अहिंसा से अंग्रेज़ सरकार पराजित हो जाए। उपन्यास पढ़ते समय तत्कालीन राष्ट्रीय सत्याग्रह आंदोलन पाठक की आंखों के समक्ष संजीव हो जाता है।

दुनिया का अनमोल रतन कहानी में खुदीराम बोस को फांसी दिए जाने से 1 साल पहले वे लिखते हैं **'खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे दुनिया का सबसे अनमोल रतन है'।** 4

सन 1921 में असहयोग माला में 'स्वराज के फायदे' शीर्षक से प्रेमचंद का एक लेख प्रकाशित हुआ था। उसमें वे कहते हैं, "स्वराज से देश को सबसे बड़ा जो फायदा होगा वह भारतीय जीवन का पुनरुद्धार है।" 5

मुंशी प्रेमचंद जी हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों की ओर से वह हस्ताक्षर हैं जिन पर हम सबको गर्व और गौरव की अनुभूति होती है। इस महान साहित्यकार की रचनाओं ने मृतप्राय लोगों में भी प्राण फूंक दिए थे। उन्होंने अपने अधिकारों के विरुद्ध उठ खड़े होने का सफल आह्वान किया। मुंशी प्रेमचंद की न जाने कितनी रचनाओं पर रोक लगी न जाने कितना साहित्य जलाने की कोशिश की गई, परंतु उनकी लेखनी सदा एक सच्चे क्रांतिकारी की भांति स्वतंत्रता आंदोलन के लिए विस्फोटक का कार्य करती रही।

स्वाधीनता आंदोलन की चिंगारी को छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी सभी कवियों ने सुलगाए रखा। इन्होंने राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत कविताएं तथा साहित्य लिखा। जिससे भारतीय जनमानस की आत्मा को झक जोर दिया तथा विदेशी शासन के विरुद्ध उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया। जय शंकर प्रसाद जी का काव्य और नाट्य कृतियों में राष्ट्रीय अस्मिता और स्वाभिमान में उद्घोष के साथ क्रांतिकारियों के प्रति गहन अनुराग भी था ।हिंदी साहित्य के विशाल कालखंड में देश भगत, स्वतंत्रता के उद्घोषक ,समाज सुधारक, के रूप में अपनी कलम से जन-जन में सोई चेतना को जगा कर क्रांतिकारी ज्वाला को जलाए रखकर साहित्य ,समाज और देश की अतिशय सेवा की। ऐतिहासिक नाटक स्कंद गुप्त में पर्ण दत्त के माध्यम से कहा गया है ,"स्कंदगुप्त को अपने राष्ट्र धर्म का बोध कराते हुए कहते हैं- किसलिए? त्रस्त प्रजा की रक्षा के लिए, अस्तित्व के सम्मान के लिए, देवता, ब्राह्मण और गौ की मर्यादा में विश्वास के लिए आतंक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए आपको अपने अधिकारों को उपयोग करना होगा। युवराज! इसलिए मैंने कहा था कि आप अपने अधिकारों के प्रति उदासीन है जिसकी मुझे बड़ी चिंता है।" 7

आनंद मठ व वंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वंदे मातरम् गीत ने हमारे सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरो कर उस समय ऐसा रोमांस खड़ा किया था कि अंग्रेज सरकार इस शब्द से ही कांपने लगी थी। जन गण मन के रचयिता रविंद्र नाथ ठाकुर ने संपूर्ण राष्ट्र को एक गीत के नीचे लाकर खड़ा कर दिया था।

दिनकर की तूलिका ने ऐसे ही वीरों के स्वागत में लिखा है ,

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

'कलम आज उनकी जय बोल।

' कवि नीरज समाज में विद्रोह की प्रवृत्ति जागृत करने के लिए कहते हैं-

मैं विद्रोही हूं जंग में विद्रोह कराने आया हूं।

क्रांति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूं।।

गोपाल दास की ये पंक्तियां देशभक्तों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई दिखाई देती हैं-

आजादी के चरणों में जो जयमाल चढ़ाई जाएगी।

वह सुनो तुम्हारे शीशों के, फूलों से गुंथी जाएगी।।

सोहनलाल द्विवेदी जी की कविताओं ने पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों के हृदय में देशभक्ति का संचार किया।

गला दिया तुमने तन को रो रो के आंसू के पानी से।

मातृ भूमि की व्यथा सह ,रहे भरी जवानी में ।।

गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित राष्ट्रीय जागरण के दूत रामनरेश त्रिपाठी अंग्रेजी शासन के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने अपनी ओजस्वी लेखनी से स्वाधीनता संग्राम के दौरान समाज को जागृत किया। अशफाक उल्ला खान जैसे देश भगत यह गाते हुए परवाने की तरह शहीद हो गए-

परवाह नहीं कुछ दम की, गम की नहीं, मातम की।

है जान हथेली पर ,एक दम में जान गवां देंगे ।।

इनके अतिरिक्त शिवमंगल सिंह 'सुमन', सिया रामशरण गुप्त, अज्ञेय ,नाथूराम शर्मा 'शंकर', श्रीधर पाठक जैसे कितने साहित्यकारों की लेखनी ने वीरता और ओज के गीत गए, जिनकी प्रेरणा से लाखों लोग हंसते-हंसते देश की खाति फांसी के फंदे पर झूल गए।

निष्कर्ष:

निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि साहित्य का विकास समाज के बीच होता है। समाज में जब कोई बड़ा परिवर्तन आता है तो साहित्य पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। इस अवस्था में लेखनी प्रत्येक काल में समाज का मार्गदर्शन करती आई है। जब-जब समाज दिग्भ्रमित होता है, राजनीति पथ भ्रष्ट होती है, और जनसाधारण किंकर्तव्यविमूढ़ की अवस्था में आता है। तब- तब लेखनी के सिपाही उठकर लिखने के माध्यम से इन सब का मार्गदर्शन करते हैं ।भारत का स्वतंत्रता आंदोलन भी इसका अपवाद नहीं है। पराधीनता के उस कल में जब सर्वत्र पराभाव ही पराभाव दिखाई देता था तब हमारे देश के अनेक साहित्यकारों ने अपनी पवित्र लेखनी से हमारे समाज का मनोबल और आत्म बल बनाए रखने का प्रशंसनीय कार्य किया। नवयुवकों के भीतर साहित्य ने ऐसी लौ प्रज्वलित की जिससे उनमें चेतना की लहर पैदा हुई और वे देश प्रेम के लिए तैयार हुए। देशवासियों में आत्म गौरव का भाव जागृत हुआ। नई शक्ति का संचार हुआ, जिससे अंग्रेज सरकार को अपने दमन चक्कर को वापस लेना पड़ा तथा भारत को स्वतंत्र करना पड़ा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. अमरेश कुमार त्रिपाठी संपादक, निराला रचनावली भाग-1,पृष्ठ 225, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1983
2 मैथिलीशरण गुप्त, भारत- भारती, अतीत खंड, राजकमल प्रकाशन, नई
3. मुंशी प्रेमचंद, रंगभूमि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2016
4. मुंशी प्रेमचंद, दुनिया का सबसे अनमोल रतन, गुप्त धन, भाग -1 पृष्ठ -91
5. स्वराज के फायदे, विविध प्रसंग, भाग -2, पृष्ठ 273

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

6. दिव्य हिमाचल, समाचार पत्र, 12 अगस्त 2018, पृष्ठ संख्या 7

7. दिल्लीबबीता गुप्ता, स्वतंत्रता में साहित्यकारों का अतुलनीय योगदान, साहित्यिक लेख, अगस्त 15, 2023

Cite This Article:

सिंह ज. ***(2024).*** *स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 6–12. **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10651951